प्रकाशनार्थ

18 सितंबर,2024

गोरखनाथ मंदिर।कथा।

युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की 55 वीं तथा राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज की 10 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित साप्ताहिक श्रीमद्भागवत महापुराण कथा के पांचवें दिन श्री राममंदिर गुरुधाम वाराणसी से पधारे श्रीमद्जगतगुरु अनंतानंद द्वाराचार्य काशीपीठाधीश्वर स्वामी डॉ राम कमल दास वेदांती जी महाराज ने व्यासपीठ कहा कि व्यक्ति के ऊपर कुर्सी का रंग नहीं चढ़ना चाहिए। कुर्सी के ऊपर व्यक्ति का रंग चढ़ जाए तो वही योगी है और व्यक्ति के ऊपर यदि कुर्सी का रंग चढ़ जाता है तो वह भोगी होता है। जो गिरकर स्वयं को संभाल ले, उसे इंसान कहते है परंतु कुसंग व्यक्ति को संभलने नहीं देता। सभलने के लिए सत्संग हीं सहारा है।

कंस के कुसंगी मंत्रियों ने सलाह दिया की ब्रजमंडल में जितने नवजात शिशु है उन सबकी हत्या कर दी जाय और कंश ने ऐसे ही किया, पर श्री कृष्ण को मार न सका फिर पूतना गली गली घूम कर श्री कृष्ण को खोजने लगी। पूतना श्रृंगार करके एकदम सुंदर रूप बना कर यशोदा जी के पास जाती और कृष्ण को उठा कर दूध पिलाने लगती है। उसने अपने स्तनों में काल कूट विष लगा रखी है। वह श्री कृष्ण को लेकर चल देती है, श्री कृष्ण ने उसका बध कर दिया। पूतना भी सौभाग्यशाली है कि वह भगवान को अपने गोद में लेकर दूध पिलाती है इस प्रकार पूतना भी तर गई।

कथा व्यास ने कहा कि जो सुख, जो आनंद आप अपने लिए चाहते हो, वह दूसरों के लिए मांग लो तो वह आनंद स्वयं तुम्हे मिल जाएगा और यदि दूसरों के लिए दुख मांगोगे तो तुमको भी दुख ही मिलेगा । इस लिए सबके कल्याण के लिए सोचिए इसी में हमारा कल्याण भी निहित है।

गो सेवा से बड़ा कोई सेवा नहीं है और गोशाला से पवित्र कोई स्थान नहीं होता है हमारे मुख्यमंत्री जी रोज गो सेवा करते है।

उन्होंने कहा कि पूतना हमारे अन्दर बैठी हुई अविद्या है, यह अविद्या अर्थात् अज्ञान जब तक रहता है तब तक वो हमे सन्मार्ग पर नहीं चलने देता है। हम जब भगवान को अपने हृदय में लाते हैं तो वो हमारे अन्दर बैठी हुई पूतना को मार देते हैं।

गोपियों की कथा सुनाते हुए कहे कि गोपियां भगवान् का प्रेम पाने के लिए एक दूसरे से ईर्ष्या करती थी। अगर ईर्ष्या भी करना है तो भक्ति में करो, सद्गुणों में करो, जीवन सफल हो जाएगा ।

उन्होने कहा कि सनातन धर्म में ऐसी विशेषता है कि यहाँ भक्त भगवान को जिस रूप में चाहे रख सकता,भगवान् प्रेम से रहते हैं। अन्य किसी धर्म में अपने पूज्य को ऐसा करने का सामर्थ्य नहीं है। माँ यशोदा परम ब्रह्म परमात्मा श्री कृष्ण का कान पकड़ कर डाटती है। भगवान अपने भक्त अर्जुन के सारथी बन जाते हैं।

कथा व्यास ने कहा कि अपने बच्चों को संस्कारित करना है, अपने बच्चों को आचारवान् बनाना है, तो उनको अपने साथ सत्संग में ले जाया करें। जिस बच्चे के अन्दर बचपन से भगवान् की भक्ति रहेगी, वह कभी भी अपने जीवन में गलत आचरण नहीं करेगा । वही बच्चा चरित्रवान बनता है, जिसका पिता अपने घर में अशुद्ध कमाई न लाता हो तथा जिसकी माता भगवान की भक्ता होती है।

बकासुर की कथा सुनाते हुए कथा व्यास ने कहा कि हमारे अन्दर जो अभिमान है वही बगुला है, तथा तेरा और मेरा नामक उसकी दो चोंच है। जिसके अन्दर अभिमान होता है, उसको वह अपनी इन चोचों से लील जाता है। भगवान की भक्ति करने से भगवान उस अभिमान को मारते हैं।

कथाव्यास ने पूतना वध, माखनचोर लीला, बकासुर वध, वत्सासुर वध, कालिया वध, ब्रह्मा मानमर्दन, गोवर्धन कथा सहित भगवान् की बाललीलाओं का वर्णन किया।

कथा सुनने के लिए बड़ी संख्या में कथा प्रेमी, श्रद्धालुजन निशुल्क बस का लाभ उठा रहे हैं। भाव विभोर श्रद्धालु संगीतमय कथा में झूम रहे हैं।

कथा का विश्राम आरती व प्रसाद वितरण से हुआ।

आरती में प्रमुख रूप से गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ जी, कालीबाड़ी के महंत रविन्द्र दास जी, दिगम्बर अखाड़ा से राम लखन दास जी, अयोध्या से राम मिलन दास जी, चेचाई राम के महंत पञ्चानन पुरी, यजमान अवधेश सिंह, वीरेन्द्र सिंह, महेश पोद्दार, विकास जालान, अजय सिंह आदि ने व्यासपीठ की आरती किया।

संचालन संस्कृत विद्यापीठ के प्राचार्य डॉ॰ अरविन्द कुमार चतुर्वेदी ने किया।